हिन्दी - ए तथा हिन्दी बी

प्रश्न निर्माण के लिए कुछ सामान्य निर्देश बिंदु :

- मूल्यांकन की दृष्टि से प्रश्न-निर्माण के तीन उद्देश्य हैं। ज्ञान परखना, बोध परखना और अनुप्रयोग। माध्यमिक स्तर पर ज्ञान की अपेक्षा अवबोधक और अनुप्रयोग (अभिकाकी) पर अधिक बल दिए जाने की आवश्यकता है।
- ज्ञान के प्रश्न, यदि हों तो, इतने सपाट या स्वत: न हों कि परीक्षार्थी की रटने की प्रवृति को बढ़ावा मिले या प्रश्नपत्र पर देखते ही तुरत-फुरत उत्तर लिख दिया जाए।
- प्राय: कौन, क्या, कब, कहाँ - वाले प्रश्न ज्ञान के होते है और क्यों, कैसे, किसलिए, कारण क्या था-आदि वाले बोध के । इसलिए प्रयास किया जाए कि बोध पर प्रश्न अधिक हों।
- प्रश्न बनाना प्रारंभ करने के पूर्व बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम, सामग्री विभाजन, समय-समय पर दिए गए देश-अनुदेश आदि का अध्ययन अवश्य कीजिए। प्रश्नपत्र में उनका पूर्ण अनुपालन अपेक्षित है। शंका होने पर उसका नितकरण करके ही आगे बढ़ें।
- आदेशवाक्य (rubric) यभासंभव छोटा, किंतु सुस्पष्ट होना चाहिए। परीक्षार्थी सरलता से समझ जाए कि उसे क्या करना है। अस्पष्ट या द्वि-अर्थी शब्दावली से बचें।
- प्रश्नपत्र का कठिनाई स्तर औसत हो, अर्थात बहुत साल तथा कठित प्रश्नों का अनुपात लगभग 15%-20% हो और औसत प्रश्नों का लगभग 70% ।

बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

- इसका उद्देश्य केवल सही उत्तर चुनना नहीं, सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनना है। आशय यह है कि सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प के अतिरिक्त अन्य विकल्प भी उसके निकट होने चाहिए। वे उपयुक्त से लगें पर हों नहीं। जैसे: संकलित परीक्षा का निम्नलिखित प्रश्न-

  'जब मैं था तब हरि नहीं'

  उपर्युक्त अंश में 'मैं' का आशय है-

  क. कबीर

  ख. बिहारी

  ग. अहंकार

  घ. अंधविश्वास

उपर्युक्त प्रश्न में 'बिहारी' और 'अंधविश्वास' उपयुक्त विकल्प नहीं हो सकते। इन्हें परीक्षार्थी प्रश्न पढ़ते समय ही नकार देगा। इनके स्थान पर यदि 'उपासक', स्वाभिमान हो, तो परिक्षार्थी क्षण भर विचार करने को बाध्य होगा।

- यह भली भाँति सुनिश्चित कर लीजिए कि प्रश्न का उत्तर एक और केवल एक ही हो।
  यहाँ ये बातें भी दिशानिर्देशक होंगी।

  वास्तविक उत्तर वाला विकल्प शेष विकल्पों की अपेक्षा अधिक दीर्घ या अधिक छोटा भी नहीं होना चाहिए.

- ऐसे प्रश्न भी देखने में आए हैं-
  - झाँसी की रानी कहाँ की रहने वाली थी?
  - किला झाँसी से 19 कि.मी. दूर था तो बताओ झाँसी कितनी दूर थी?
  - 'पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश' - यहाँ किस ऋतु का वर्णन किया गया है? वर्षा, ग्रीष्म, शीत, हेमंत

  प्रश्नों को चुस्त और सटीक बनाने के लिए विकल्प पूरे वाक्यों की अपेक्षा वाक्यांश, पदबंध या एक दो पदों में हों तो अच्छा है। एक ही अंश प्रत्येक विकल्प का घटक बन रहा हो तो उसे आदेश वाक्य (rubric) में ले आइए, और विकल्पो से हटा दीजिए।

अपठित बोध

समाग्री :

- अपठित बोध (गद्यांश/पद्यांश) के लिए चयन करते समय विद्यार्थियों के स्तर का ध्यान अवश्य रखें। कभी-कभी कामायनी, उर्वशी से या अज्ञेय, मुक्तिबोध आदि की अमूर्त और दुरूह रचनाएँ दे दी जाती है। गद्यांश में भी या तो भाषा कठिन होती है, या संकल्पना, या दोनों ही।
- काव्यांश केवल खड़ी बोली हिंदी का हो, ब्रज/अवधी का नहीं।
- बाज़ारू गाइड्स/नोटस की सहायता कृप्या न लें, उनकी सामग्री दोषयुक्त या भ्रामक हो सकती है। समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकाल्य की सामग्री और आपका अपना पुस्तक संग्रह इस कार्य के लिए उपयुक्त संसाधन है।
- अनुच्छेद बहुत बड़े या बहुत छोटे न हों। कविताओं में एक मुद्रित पृष्ट की भी कविता दी गई है और चार पंक्तियों की भी। संतुलन आवश्यक है।
- सामग्री चयन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि वह अनुच्छेद किसी विशेष धर्म, जाति संप्रदाय, राजनीतिक विचारधारा का समर्थन या उन पर टीका टिप्पणी करने वाला न हो।

प्रश्न: जैसा कि 'अपठित बोध' नाम से स्पष्ट है, इस खंड में सामग्री के अवबोधन पर बल है। इसलिए अधिक प्रश्न बोधात्मक हों, ज्ञानात्मक कम। ज्ञानात्मक प्रश्नों में भी स्वत: स्पष्ट (Obvious) उत्तर वाले प्रश्न न पूछें।

- अपठित काव्यांश में 'अलंकार' का प्रश्न भी न पूछा जाए, यह प्राय: 'सराहना' का विषय है, अर्थ बोधन का नहीं।

- काव्यांश में भाषिक संरचना पूछना भी संगत नहीं है। हाँ, कभी-कभी किसी विशेषण के प्रयोग सौष्ठव पर प्रश्न संगत हो सकता है।

  सामग्री के समग्र भाव/संदेश/विचार पर कम से कम एक प्रश्न अवश्य हो।

व्याकरण

- उत्तर स्वत: स्पष्ट न हों। इस प्रकार के प्रश्न भी देखने में आए हैं-

  1. 'आवा' प्रत्यय किस शब्द में है?

     पहनावा, लिखावट, चलताऊ, सुंदरता

  2. भाववाचक संज्ञा का उदाहरण छाँटिए-

     नदी, चंडीगढ़, सुंदरता, नगर

  आप सहमत होंगे कि यहाँ शेष तीनों विकल्प कहीं भी उत्तर के निकट नहीं है।

- वाक्य भेद आदि में उदाहरण के रूप में दिया गया वाक्य भाषा में सुप्रयुक्त और ग्राह्य हो। स्वयं आविष्कृत वाक्य कभी-कभी दोष युक्त हो सकते है। अच्छा हो पाठों से ही वाक्य चुनकर दें। कभी-कभी सकर्मक क्रिया का भाववाचक पूछ लिया जाता है, या कर्मवाक्य के ऐसे उदाहरण जो प्रयोग में नहीं है, दिए/आते है। पाठ्यपुस्तक की सामग्री का उपयोग करने पर यह संभावना नहीं रहेगी।

- अशुद्धि शोधन के प्रश्न में अशुद्ध उदाहरण ऐसे हों जिनमें प्राय: प्रयोग की अशुद्धि मिलती है या अशुद्धि की संभावना होती है। केवल पदक्रम बदलना या वचन आदि की अशुद्धि बलात् दिखाना प्रश्न के उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता।

- मुहावरा लाक्षणिक प्रयोग होता है, इसलिए रिक्तस्थान की पूर्ति लक्ष्यार्थ वाली हो, अभिधेय (शब्दार्थ) वाली नहीं।

- उदाहरण देकर अलंकार पूछ रहें हों तो ध्यान रखें कि उदाहरण में एक ही अलंकार प्रयुक्त हो। कभी-कभी उपमा आदि के साथ अनुप्रास अलंकार भी होता है। यह स्थिति परीक्षार्थी के लिए भ्रामक हो सकती है।

पाठ्यपुस्तक

- बहुविकल्पी प्रश्न संबंधी सुझाव ऊपर दे दिए गए हैं।

- निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक प्रश्न 5 बहुविकिल्पी प्रश्नों का बनाया जाना अपेक्षित है। उसमें लेखक/कवि/पाठ/कविता का नाम पूछना इसलिए संगत नहीं होगा कि शेष सभी विकल्प तर्कसंगत/उपयुक्त नहीं होंगे। इसलिए ऐसा प्रश्न न बनाया जाए।

- इस खड़े में दिए जाने वाले गद्यांश/पद्यांशों से परीक्षार्थी सुपरिचित है। कक्षा में वे सघन रूप से पढ़े-पढ़ाए गए है, इसलिए यहाँ ज्ञानपरक प्रश्नों की अपेक्षा बोधपरक प्रश्नों का औचित्य अधिक है। परीक्षार्थी की वास्तविक योग्यता बोध परक प्रश्नों के द्वारा ही आँकी/परखी जा सकती है।

- उत्तर के आकार के अनुसार प्रश्न तीन प्रकार के हैं।- अतिलघूत्तर (VSA) लघूत्तर (SA) और निबंधात्मक (E)

इनकी पहचान उनके लिए निर्धारित अंको के आधार पर भी होती है। प्राय: 1 या 2 अंक के प्रश्न अतिलघूत्तर , 3,4 अंक के लघुत्तर तथा 4, 5+ अंकों के निबंधात्मक होते हैं। इसलिए प्रश्न ऐसा हो कि उत्तर का आकार निध ारित अंको के अनुरूप हो।

- प्रश्न के लिए जितने अंक निर्धारित हों उत्तर में उसी अनुपात के बिंदु (points) बन सकें। अच्छा हो प्रश्न में संकेत कर दें . . . . . 'तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।' .....'दो मुख्य बिंदु लिखिए।'
- जिस प्रश्न में विकल्प देना अपेक्षित हो वहाँ यह सुनिश्चित करें कि दोनों विकल्पों का कठिनाई स्तर समान हो।

निबंध

- अनुच्छेद और निबंध के विषयों में अंतर अपेक्षित है। निबंध के लिए उपयुक्त विषय पर अनुच्छेद न लिखवाएँ। रूपरेखा-बिदुओं में भूमिका, वर्ण, उपसहार-इन्हें सम्मिलित न करें। विषय विस्तार के बिंदु दें।
- निबंध का विषय भी परीक्षार्थियों के अनुभव जगत और परिवेश से संबंधित होना चाहिए।
- माध्यामिक स्तर पर साहित्य और समाज, आधुनिक कला, आधुनिक कविता की विशेषताएँ जैसे विषयों पर निबंध लिखने की अपेक्षा करना कुछ ज़्यादती है

पत्र

- पत्र प्राय: बहुत सरल और परंपराप्राप्त विषयों पर लिखाए जा रहे हैं, जिन्हें वे तीसरी कक्षा से करते चले आए है। कुछ कल्पना, मौलिकता, समीचीनता का समावेश अपेक्षित है।